प्राक्कथन

डॉ. डी पी भट्ट
अध्यक्ष
विज्ञान भारती, दिल्ली
पूर्व मुख्य वैज्ञानिक एवं
विभाग प्रमुख, बौद्धिक संपदा प्रबंधन
सी एस आई आर– राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला
DAAD Fellow (Germany) एवं
प्रवक्ता, रसायन विज्ञान
कुमांऊ विश्वविद्यालय अल्मोड़ा परिसर

संकट में अच्छी वस्तु, अच्छे संबंध या अच्छी नीतियाँ ज्यादा अच्छी लगने लगती हैं। इसलिए विश्वव्यापी कोरोना काल में आदरणीय प्रधानमंत्री जी द्वारा उनके लॉकडाउन – 4 संभाषण में लोकल अथवा स्वदेशी मंत्र को व्यक्ति व देशीय हित में नया विकास मॉडल बनाने हेतु सभी को अनुशासनात्मक रूप से कर्तव्यनिष्ठ तथा संकल्परत होने का आह्वान किया जो आज की परिस्थिति में "विभा मोडस ओपरेंडी" को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तर से अधिक प्रासंगिक बनाती है। देश में स्वदेशी साइंस मूवमेंट ऑफ इंडिया के नाम से प्रसिद्व विज्ञान भारती ने, भारतीयों की अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति, ऋषि परम्परा, मूल्यों, दार्शनिक व्यवस्थाओं, पुराणों, ग्रंथों व वेदों में उद्धृत ज्ञान यानि विद्या (विज्ञान) व परमविद्या (सर्वोच्च ज्ञान) एवं समृद्ध भाषा की अपनी स्थापित धरोहर को पहचाना है और इस बपौती का प्रयोग करते हुए उसे आधुनिक विज्ञान, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी और सामाजिक विकास के क्षेत्र में हो रही नई पहलों के साथ जोड़ने का प्रयत्न लंबे समय से जारी रखा है तथा पिछले 20–25 वर्षों में विज्ञान भारती, दिल्ली द्वारा भारतीय भाषाओं में 2 दर्जन से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन भी हुआ। प्राचीन भारत की जड़ों में दक्षता से सभी कार्यों में सतत लिप्त होकर दक्षता से परमोत्कर्ष ''योगः कर्मसु कौशलम्'' पर बल देना, उस समय के लोगों की कर्मण्यता का प्रमाण–चिह्न है, और जो इस सेवा भाव से स्वयभ्भू निष्ठा से सामाजिक योगदान करते हैं, वे किसी भी विपदा से सर्वदा मुक्त होते हैं। आज कोरोना काल में भी हमारी टीम ने लगातार अच्छा काम कर इस उक्ति को चरितार्थ बनाया – हमारी तरफ से उन्हें साधुवाद। इस प्रकार स्वदेशी विज्ञान जैसा कि उपनिषदों में बताया है और विश्व स्तर पर भी प्रचलित हो रहा है, सिर्फ भारतीय संस्कृति को समझने या ज़िंदा रखने के लिए नहीं है बल्कि वह एक भाषा को जानने का ज्ञान है, जो इस संस्कृति को सुरक्षित रखती है। यदि हम अपनी जड़ अर्थात् संस्कृतनिष्ठ ज्ञान को ही खोद डालें तो पूरा पेड़ ही उखड़ जाएगा, इस संदर्भ में मैं मानता हूँ कि हिन्दी भाषा के नाम का महिमागान व सैलिब्रेशन मात्र देश में न हो, बल्कि यथार्थ में यह अत्यंत आवश्यक है कि हमारा मूल उद्देश्य विज्ञान की मौलिकता और तथ्यात्मकता को खोए बिना इन उपलब्धियों को आम जन तक पहुँचाने हेतु बिना अंग्रेजी के विरोध से उनकी ही स्वभाषा (देशीय भाषा, मातृभाषा) में उपयोग हो व विज्ञान को एक विशिष्ट वर्ग (Class Commodity) मात्र के लिए महलों में बंद रखने हेतु नहीं अपितु जनमानस (Mass Commodity) तक उसे पहुँचाते रखने का संस्था का संकल्प भी पूर्ण हो, यही एक उद्देश्य इस पत्रिका का भी है। अतः हमें इस मॉडल को पॉलिसी मोड के तहत सतत विकास के लिए प्रभावशाली बनाना होगा जिसमें ई– विज्ञान पत्रिका का सर्जन मील का पत्थर साबित होगा।

वर्तमान परिस्थितियों में इस उद्घाटन अंक को हमने कोरोना एवं पर्यावरण विशेषांक से नामांकित किया।

सुमंत्रिते सुविक्रांते सुकृते सुविचारिते।

मंत्र के तहत इन्हीं संकल्पनाओं एवं विचारों को दृष्टिगत रखते हुए आत्मनिर्भरता लाने हेतु सतत विकास के मार्ग पर बढ़ने के लिए किस प्रकार हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर नये आर्थिक आयाम बनाएँ, इस पर भी आज की परिस्थिति में चर्चा व विचार मंथन आगे भी साझा व प्रकाशित होगा, इस शुभेच्छा के साथ नई खोजों की प्रक्रिया के जरिए ही ज्ञान धन सम्पदा में रूपांतरित हो और इसी कड़ी में हमारे देश में एक सक्षम ढाँचा खड़ा करने की ज़रूरत पर बल देकर ऐसे ढाँचे के अन्तर्गत एक दूसरे पर निर्भर रहने वाली कंपनियों, ज्ञान देने वाली संस्थाओं (यूनिवर्सिटी,

कॉलेज, अनुसंधान संस्थान) के बीच तालमेल बैठाने वालों (विशेषज्ञ, तकनीकी सेवा या सलाह देने वाले) और ग्राहकों के बीच निकट संबंध स्थापित करने वाले संयुक्त तंत्र विकसित करने होंगे जिससे गुणवत्ता के साथ–साथ उत्पादकता में भी बढ़ोतरी होगी। इन तीनों घटकों को एक साथ लाने और एक मंच प्रदान करने का हमारा निःस्वार्थ सेवा प्रयास देश में स्वावलंबन व राष्ट्रीयता का वातावरण भी तैयार करेगा, जिसके लिए इन्डस्ट्री से आर्थिक सहयोग अपेक्षित है तभी ई–मोड से प्राप्त ज्ञान या ई– प्रकाशन डिजिटल नॉलेज एक प्रभावी आत्मनिर्भर ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी नेशन प्रतिस्थापित करने में सहायक होगा – ऐसी प्रभु से प्रार्थना।

ब्रह्माचार्योवसिष्ठोऽत्रिर्भनुः पौलस्त्यलोमशौ।
मरीचिरंगिरा व्यासो नारदः शौनको भृगुः।।
च्यवनो यवनो गर्गः कश्यपश्च पराशरः।
अष्टादशैते गंभीराः ज्योतिः शास्त्रप्रवर्तकाः।।

अंततः यह प्रकाशन उन ज्ञात व अज्ञात ऋषि परंपरा यथा नारद संहिता में उद्धृत प्राचीन सभी 18 ज्ञानी/विज्ञानी को समर्पित है, जिन्होंने ईश्वरीय बुद्धि तथा अथाह अध्ययन के फलस्वरूप मानव जाति को प्रकृति एवं विज्ञान के अमूल्य योगदान का रहस्योद्घाटन किया था, साथ में आज संस्कृत निष्ठ ज्ञान के धनी डॉ. मुरली मनोहर जोशी जी, पूर्व मंत्री, मानव संसाधन विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा महासागर विकास, भारत सरकार ने ज्ञान विज्ञान तथा सामाजिक समन्वय स्थापित करने में विभा दिल्ली के २ दशकों के गतिमान कार्यकलापों में देशभर में जो एक सतत यशस्वी मार्गदर्शन हम सबको दिया, उसको मैं पत्रिका के इस प्रथम अंक में गुरुशरणागति के रुप में उनको वन्दन करता हूँ।

जुलाई 21, 2020
ग्रेटर नोएडा

देवेन्द्र प्रकाश भट्ट

****